गीतामृत

(108 श्लोक)

मूल कवयित्री
डॉ. केतवरपु राज्यश्री

अनुवादक
'अनुवादश्री' डॉ. एम. रंगय्या

G E E T A M R U T
BY
Dr. Kethavarapu Rajyasri

© **author**

First Edition : **2015**

Published by :
Dr. Kethavarapu Rajyasri
HYDERABAD-20

For Copies :
Dr. Kethavarapu Rajyasri
301, Gokul Apartments,
Street No. 4, Ashok nagar, HYDERABAD-20
Cell : 8500121990, Ph. No. 27650267
Email : rketavarapu@gmail.com

Price : **Rs. 101/-**
US : $5

Printed at :
Akshaya Graphics
Chikkadpally, Hyderabad.
Cell : 9989890588
Email : akshayatammisetty@gmail.com

Laser Type setting :
Azam Khan, Hyderabad-500 012
Cell : 9346966392
Email : sakushi786@gmail.com

समर्पण

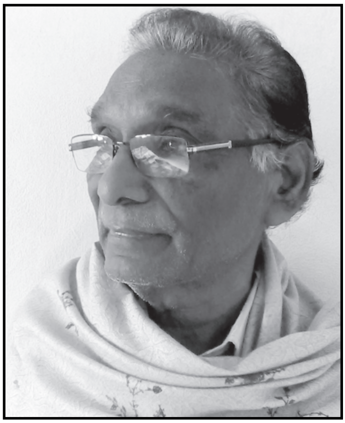

प्रसिद्ध कवि
पंखों के रूपशिल्पी
आदरणीय
एम. के. सुगमबाबु जी को
सादर समर्पित

मंडलि बुद्ध प्रसाद
उपाध्यक्ष
आंध्र प्रदेश विधानसभा

फोन : 040-2323 3699 (का.)
सेल : 98487 80872
पब्लिक गार्डन, हैदराबाद-500004

पुरोवाक्

भारतीय दर्शन शास्त्र में प्रमुख रूप से तीन ग्रंथ अर्थात् उपनिषद, ब्रह्मसूत्र एवं भगवद् गीता आध्यात्मिक त्रयी, प्रस्थान त्रयी के नाम से विख्यात, हैं। वे ग्रंथ सम्मत विषयों पर अंतिम प्रमाण संस्थापित करते हैं। इन तीनों में कोई वैचारिक विरोध नहीं है। इन ग्रंथों में अंतिम यथार्थ का स्पष्टीकरण एवं उसे पूर्णरूप से समझने के साधनों को सुस्पष्ट किया गया है। यदि कोई प्रश्न करें कि हिन्दू धर्म में धर्म सम्मत प्राधिकार क्या है तो इसका उत्तर यह “त्रय” (ट्रिनिटी) है।

इन ग्रंथों में हिंदू धर्म से संबंधित एक भी ऐसा मूलभूत बिंदु नहीं है जिनका उल्लेख नहीं किया गया हों। अन्य ग्रंथों में आध्यात्मिकता किसी विशेष पहलू का विस्तृत निरूपण जैसे भक्ति एवं योग को देखा जा सकता है। परन्तु धर्मग्रंथ संबंधी त्रय में जो सार के रूप में प्रस्तुत किये गये, उनकी ही व्याख्या है। ऐसा हो तो प्रस्थानत्रय एवं अन्य ग्रंथों में उल्लेखित विवरणों में एक संघर्ष उत्पन्न होता है एवं केवल प्रथम पक्ष का निर्णय ही परंपरागत रूप में अंतिम रूप से स्वीकारा जाता है।

प्रस्थान-त्रय के तीन ग्रंथों में से भगवद्गीता एक ऐसा अद्भुत धर्मग्रंथ एवं पवित्र प्रलेख (दस्तावेज़) है, जिसमें आधिकारिक ऐसे विवरण हैं जिन्होंने विरोध का सामना किया, साथ ही शास्त्र-प्रतिकूल अथवा असनातनी आक्रमणों का सामना किया। महाभारत को “पंचमवेद” की संज्ञा दी गई है। भगवद्गीता को विस्मयकारी मनुष्य के कार्य-कलापों आकांक्षाओं एवं उपलब्धियों के इतिहास में सम्माननीय स्थान प्राप्त है। भीष्मपर्व के अध्याय 25 से लेकर 40 अध्यायों में इस अमर प्रवचन का उल्लेख है। इसमें 18 अध्याय हैं एवं 700 श्लोक।

दर्शन में महाभारत को संक्षिप्त दर्शन शास्त्र माना जाता है जिसने असाधारण गीता का रूप धारण किया। मनुष्य शरीर में हृदय का जो स्थान है, वही स्थान महा प्रबंध काव्य अर्थात् महाभारत में गीता का है।

हज़ारों वर्षों से यह माना गया है कि जो संपूर्ण व सही व्यक्तित्व निर्मित करने की आकांक्षा रखते हैं, उन लोगों के लिए गीता एक श्रेष्ठ व समुचित पथ-प्रदर्शक है। महात्मा गाँधी जी ने इस सिद्धान्त का आजीवन अक्षरश: पालन किया था।

स्वामी विवेकानंद ने इस विषय पर बल देते हुए कहा था कि जो किसी भी प्रकार के अभिमान से दूर रहकर (बिना कत्तृत्व भाव के) कार्य करते हैं, उन्हें कोई पाप प्रभावित नहीं करता। वास्तव में संसार के हित व कल्याण के लिए काम करते हैं। फलाशा के प्रति निस्पृह हो, परिणाम के प्रति असंबद्ध हो अर्थात् किसी प्रकार का लगाव न रखते हुए, कार्य करते हैं। उन्हें परमानंद एवं स्वतंत्रता की प्राप्ति होती है। गीता में कर्मयोग के इसी रहस्य पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ. केतवरपु राज्यश्री एक मंजी हुई कवयित्री है। उन्होंने भगवद्गीता के 700 में से 108 श्लोक रेक्कलु (पंख) नामक एक सरल छंद में अनुवाद के लिए चुना है। वस्तुत: हिंदू-परंपरा में संख्या 108 का अपना महत्व है। उन्होंने भगवद्गीता से कुछ महत्वपूर्ण श्लोकों का चयन कर, साधारण पाठकों के हित में तेलुगु में रूपांतरित किया। अंग्रेज़ी में भी लिप्यंतरित करवाया उसकी लोकप्रियता देख उसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाश में आया है। पद्य रचना में सरल प्रवाह के कारण पठनीय है। उनका अंग्रेज़ी रूपांतर भी समान रूप से उत्तम है।

मैं डॉ. राज्यश्री को बच्चों एवं भगवद् गीता जैसे भारतीय महान् धर्मशास्त्र में, तेलुगुतर भाषियों में रुचि एवं उत्साह उत्पन्न करने योग्य इस मार्गदर्शक कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

–मंडलि बुद्ध प्रसाद

आचार्य एस.वी. रामा राव
पूर्व अध्यक्ष, तेलुगु विभाग और डीन
उस्मानिया विश्वविद्यालय

प्लॉट नं. 205, साई बालाजी अपार्टमेंट
चित्रा लेआउट, एल.बी. नगर
हैदराबाद-74, सेल-9848012053

धर्मामृत

भारतीय वेदान्तसार है भगवद्गीता। कर्म, ज्ञान, भक्ति ध्यान धाराओं का त्रिवेणी-संगम का गीता आचरनात्मक तत्त्व है। इसी कारण श्रीकृष्ण के गुरूपदेश गीतोपदेश का आध्यात्मिक जगत में गुरुस्थान है। विविध भाषाओं में अनुवाद, व्याख्यान के द्वारा यह विश्व व्याप्त बना है।

जरा मरण, दुख भाजक, मानव-जीवन में सिर उठाती समस्याओं का निदान बताकर समग्र व्यक्तित्व के विकास का सहायक है गीता। मैं अल्प हूँ की भ्रांति से मुक्ति प्रदान कर जीवन-यान को निरंतर अग्रसर कराती है गीता। किंकर्त्तव्य विमूढ़ नर नारायण प्रबोध से समस्या के सोपानों को पार कर संपूर्णता को प्राप्त करता है।

गीता तत्त्व को उद्घोषित करते 108 श्लोकों का चयन कर कवयित्री केतवरपु राज्यश्री ने गीतामाधुर्य का आस्वादन कराया। मूल के भावों को पाठकों को करतलामलक बनाया। इसके निम्न उदाहरण ही प्रमाण है-

"वासांसि जीर्णनि यथा विहाय" (सांख्य योग-22)
फटे वस्त्रों को छोड़
नूतन वसन धारण करने-सा
नई देह में
आत्मा का प्रवेश

शरीर है
नश्वर !

X X X

सुगंध को हवा ढो चलने के समान
गत जीवन की भाव-परंपरा को
जीव ढो जाता है
नये जन्म में-

जैसी काव्य पंक्तियाँ गीता के अनुसृजन-सा आह्लाद कराती हैं। गीतासार को देशी काव्य-प्रक्रिया अर्थात् पंखों में लिखना इसकी विशेषता है। चार चरणों के पश्चात् उपसंहार के चरण कवयित्री की प्रतिभा को प्रमाणित करते हैं-

"धर्मपालन ही कर्त्तव्य
संकल्प ही कार्यसिद्धि
निर्विकार ही चिन्तारहित
अतीत है आत्मा
आलोक
मेरा निवास"

आदि पंक्तियाँ अच्छे दृष्टांत हैं। "वेदना में शोधन" अर्जुन के कथन से प्रारंभ हो "गीताज्ञान मोक्षकारक" संजय की फलश्रुति से समाप्ति इस कृति की शोभा को और बढ़ाती है।वर्तमानकाल में रसज्ञ पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित करता छंद है "पंख"।

"चमक-दमक पत्थर असंख्य क्यों
सच्चा असली नीलम एक हो तो पर्याप्त!"

प्रमाणित करती प्रक्रिया का मार्गदर्शन सुगम बाबू ने किया। वर्तमान कवियों ने उनका अनुसरण करते सुफलों को प्राप्त कर रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भारत भाषा भूषण डॉ. केतवरपु राज्यश्री का गीतामृत। महाभारत का मणिदीप...भगवद्गीता के धर्मामृत को आस्वाद योग्य, सरल सुंदर रूप में अति आकर्षक शैली में मोड़ कवयित्री का मन:पूर्वक अभिनन्दन करता हूँ। "चाँदनी के सोपानों" (पंखों का संकलन) को पार कर और अधिक विकास की ओर बढ़े- यही मेरी आकांक्षा है।

-डॉ. एस.वी. रामाराव
9848012053

पुष्य शुद्ध संक्रांति
14 जनवरी, 2015

एम.के. सुगम बाबू
"रेक्कलु" के जनक

502, साई तेजा एन्क्लेव
सुरारम् क्रॉस रोड, वेंकट्राम नगर
हैदराबाद-55, सेल-8096615202

मानुष रूप में दैव

मनुष्य के द्वारा ही भगवान ने अपने अस्तित्व को घोषित किया। उसी प्रकार साहित्य के द्वारा ही अपने बारे में स्पष्ट किया। मनुष्य और साहित्य को अलग रखा जाए तो भगवान् शब्द का अर्थ नहीं सूझता।

पंखों की प्रक्रिया में प्रकाशित तीसरा प्रयोग डॉ. केतवरपु राज्यश्री विरचित पंखों में "गीतामृत" है। क्या वेद व्यास ने कृष्ण के द्वारा गीता बोध किया? या श्री कृष्णा के उपदेश को वेदव्यास ने रचा? यह बात मेरी दृष्टि में विवादास्पद नहीं। किसी के द्वारा "गीता" का परिव्याप्त हुआ हो पर एक तात्विक भूमिका ने ऊर्जा प्रदान किया। किसी का भी विश्वास हो विश्व साहित्य में एक अद्भुत, अनन्य काव्य है "महाभारत"। उसमें अत्यंत प्रमुख बात है परमात्मा को प्रमाणित करने का यत्न।

"कुरुक्षेत्र" संग्राम के प्रारंभ में क्या स्वजनों से युद्ध उचित है- पार्थ ने इस असंगति को व्यक्त कर, विरक्त बन, धनुष-बाणों को त्याग दिया। यह देख कृष्ण ने अपनी अपार शक्ति का प्रदर्शन करते हुए गीता के उपदेश के साथ-साथ विश्वरूप का प्रदर्शन किया। रामायण एवं महाभारत हमारे ऐसे काव्य हैं, जो हमारी जाति के नस-नस में समा गये हैं। इन पर अब आपत्ति उठाना-प्रशंसा करना व्यर्थ है।

पहले "पंखों में गीतामृत" रची डॉ. केतवरपु राज्यश्री जी का मैं अभिनंदन करता हूँ। विश्वविख्यात्, विश्वव्याप्त बहुल प्रचार वाले गीता प्रबोध को उन्होंने पंखों की प्रक्रिया में समेटना, उसके सार को पंखों में उड़ाना, यह देख मैं गदगद् हो गया।

पहले पंखों की प्रक्रिया में प्रकाशित, श्री पी. वीरा रेड्डी कृत "चाणक्य नीति", इस बीच श्री डी. हनुमंतराव का "वर्ल्ड क्लासिक" नामक टैगोर गीतांजलि को पंखों में अनुसृजन करना, अब "राज्यश्री" का "पंखों में गीतामृत" प्रकाश में आना, उस प्रक्रिया

की समर्थता तथा सामग्रता को उद्घाटित करना है। यह देख मैं गर्व का अनुभव भी कर रहा हूँ। पंखों में एक काव्य के आने की बड़ी अभिलाषा है प्रोफेसर, मसन चेन्नप्पा की। मेरे सच्चे मित्र, उत्तम कवि, पंडित, आचार्य की अभिलाषा भी साकार होने वाली है।

"पंखों में गीतामृत" डॉ. राज्यश्री के लिखे एक पंख पर विचार करेंगे.... भगवान कृष्ण पार्थ से कहते हैं-

क्रोध से अविवेक
अविवेक से मतिविभ्रम
तद्वारा कुबुद्धि
उससे सर्वनाश-

यह गीता श्लोक का हिन्दी अनुवाद है। पर कवयित्री यहीं रुकी नहीं। उन्होंने यूँ समाप्त किया-

धीरे-धीरे
पतन।

उनकी विशेषता यही कि डॉ. राज्यश्री जी ने एक स्पष्ट अंत देकर अपनी विशेषता को स्पष्ट किया है। इससे बढ़ विवरण या व्याख्यान और क्या होगा। आकाश से बढ़ उड़ना नहीं है। यह पंखों में ही सुसाध्य हुआ।

"पंखों में गीतामृत" में आद्यंत एक असाधारण सत्य-गांभीर्य छाया हुआ है। इस विशेषता को साध्य बनानेवाली डॉ. राज्यश्री श्रेष्ठ कवयित्री के रूप में, साहित्यकारों की प्रशंसा पायेगी- इसमें संदेह नहीं।

शुभकामनाओं सहित.....

दिनांक : 9-1-2014

-एम.के. सुगम बाबू
"रेक्कलु" के जनक

भारत भाषा भूषण
डॉ. केतवरपु राज्यश्री

301, तीसरा माला, गोकुल अपार्टमेंट्स
स्ट्रीट नं.4, अशोक नगर,
हैदराबाद-20, फोन : 040-27650267
सेल-8500121990
ई-मेल : rketavarapu@gmail.com

श्री वासुदेवायनम :

भारतीयों के अस्तित्व की पहचान के रूप में विराजनेवाले पावन ग्रंथ है भगवद् गीता। स्वयं भगवान के मुख से निकली गीता ही भगवद् गीता है। साक्षात् भगवान ने ही सनातन धर्म के वैभव के बारे में बताते हुए, कुरुक्षेत्र में वेदनामय हृदय वाले अर्जुन को कर्म, धर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य का उपदेश दिया। स्वपक्ष एवं विपक्ष में रहने वाले बंधु-मित्रों का संहार करने से प्राप्त राज-सुख क्यों ? इसी वेदना के बवंडर में छटपटाते हुए, व्याकुल चित्तवाले अर्जुन को, अहंकार एवं ममता को छोड़ कर्म को ईश्वरार्पण कर, चित्त को शुद्ध करने से मुक्ति-साध्य होगी, श्रीकृष्ण भगवान ने उपदेश देकर, मानव-मात्र को अवगत कराया।

18 अध्यायों से 700 श्लोकों से विलसित यह गीता "अर्जुन विषादयोग" से प्रारंभ होकर, मोक्षसंन्यासयोग तक समाप्त होने पर, विषाद को भुलाकर मोक्षपथ की ओर अग्रसर करती है। पंचमवेद के रूप में भासित महाभारत मणिदीप है भगवद्गीता।

जीवन क्षण भंगुर है। कब वह रुक जायेगा पता नहीं। पानी के बुल-बुले सा फट जानेवाला जीवन भक्ति, ज्ञान, वैराग्य को मन में स्थान देकर, भगवान को अंतरंग में ध्यान करते हुए, महोत्तम गीता ज्ञान सागर में डुबकियाँ लगाते, उस पथ पर चलते, आचरण करते उत्कृष्ट संसार सागर को पार कर तर जाने को कहता है। पुनर्जन्म विहीन ब्रह्मपद को पहुँचना होगा। यही भगवान का कथन है। आकांक्षा भी।

गीताये हृदयम पार्थ
गीताये सारमुत्तमम्
गीताये ज्ञान मत्युग्रम्
गीताये ज्ञान मन्वयम्

गीता धर्म को ही अपना स्वरूप, वैभव बताया श्री भगवान ने।

बंधन व्यथा को बाँटता है। नाम और ख्याति देशकाल के लिए सीमित हैं। कष्ट और

आँसू जीवन को दुखमय बनाते है। ये सभी सीमित विषय हैं। अशाश्वत हैं। मनुष्य को शाश्वत आनंद प्रदान करता ब्रह्मपद एक ही। शाश्वत होने के कारण पुन: जन्म लेने की जरूरत नहीं। यही ब्रह्मपद की विशेषता है। यही मुक्ति-मार्ग है। गीता में भगवान कृष्ण ने इसी बात पर बल डाला। मानव मस्तिष्क में इस बात को पहुँचाने के लिए 18 अध्यायों 700 श्लोकों में पनु: जोर देकर बताया।

मैंने इन 700 श्लोकों में 108 श्लोकों को चुनकर उनके सार को आजकल बहुल प्रचार प्राप्त श्री सुगम बाबू जी के "पंख" नामक प्रक्रिया में "पंखों में गीतामृत" के रूप में रचा। गीता के भाव को सरलता एवं आसानी से समझने के लिए यह पुस्तक पाठकों को पसन्द आयेगी, मेरा यह विश्वास है। "पंख" प्रक्रिया में मेरी यह दूसरी रचना है। पहली है "चाँदनी के सोपान"। साधारणतया "पंख" प्रक्रिया में सामाजिक अंशों को काव्य-वस्तु के रूप में लेकर तात्विकता को जोड़ते हैं। भगवद गीता के महत्व को दुगना करने के लिए सावधानी से लिखना होगा। इसीलिए मैंने इस छंद के जन्मदाता से समय-समय पर सलाह लेकर इस अनन्य रचना की पूर्ति की।

इस विशिष्ट रचना को प्रोत्साहित कर अपने अमूल्य सुझावों से प्रेरित करने वाले श्री सुगम बाबू जी, उसी प्रकार पंखों के कवि श्री धूर्जटि जी के सहयोग के लिए मैं कृतज्ञता-ज्ञापित करती हूँ। इसकी भूमिका के लेखक श्री मण्डलि बुद्ध प्रसाद डिप्यूटी स्पीकर आं.प्र., डी.वी. सुब्बाराव उस्मानिया विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के अध्यक्ष आचार्य मसन चेनप्पा जी को, प्रसिद्ध आलोचक सेवा-निवृत्त आचार्य श्री एस.वी. रामाराव जी को हार्दिक धन्यवाद। मुझे आशीष देकर अपने संतोष को व्यक्त करनेवाले डॉ. पी.एस. मूर्ति, श्रीमती शारदा जी का आशीष प्रदाता मेरे बहनोई केतवरपु सुब्रह्मण्यम जी का सदा ऋणी रहूँगी। प्रस्तुत पुस्तक के हिंदी अनुवादक डॉ. एम. रंगय्या तथा शब्द शिल्पी आज़म खान को धन्यवाद समर्पित करती हूँ। अंत में मैं मेरे पतिदेव जो मेरी रचना के प्रेरक हैं, सदा मेरी सहायता करने में अग्रिम रहते हैं- श्री माधवराव जी, मेरी संतान फणींद्र, प्रियंका, नाती अक्षर श्रीकांत का सहयोग अविस्मरणीय है।

-डॉ. केतवरपु राज्यश्री
भारत भाषा भूषण

नेपथ्य

कुरुक्षेत्र-संग्राम में युद्ध करने को तत्पर स्वजनों को अवलोक, जिनके लिए इस राज्य को, भोग को, सुखों की आकांक्षा की, उनके साथ युद्ध करने की अनिच्छा से, तीनों लोकों के अधिकार का वरण करने पर भी स्वजनों का संहार मुझसे होगा नहीं, द्रवित हृदय से अर्जुन श्री कृष्ण से यों कह रहा है.....

पार्थ :

हे कृष्ण ! स्वजनों का वधकर
प्राप्त हुई विजय
राज्य - भोग
क्यों कर यह जीवन ? -

वेदना में
शोधन !

भगवान :

हे पार्थ ! दुख करना है अनुचित
जन्म-मरण से
पंडित होते
अतीत-

निर्वीर्य बनाती है
निराशा !

फटे वस्त्रों को छोड़
नूतन वसन धारण-सा
नई देह में
आत्मा का प्रवेश -

शरीर है
नश्वर!

शस्त्र जिसे काट न सके
आग जिसे दहन न कर सके
जल जिसे भिगो न सके
हवा जिसे सुखा न सके-

अतीत है
आत्मा!

जन्म

मरण

पुनः जन्म

तथ्य-

अनिवार्य है

फिर दु:ख क्यों ?

स्वधर्म के आचरण में

संशय मत कर

युद्ध ही

क्षत्रियों का है धर्म-

धर्मो रक्षति

रक्षितः

युद्ध में मरण
स्वर्ग
विजय
राज्य प्रदाता-

अनिवार्य है
कर्त्तव्य!

भावावेश को
छोड़ जय-पराजय को
सम भावना से कर युद्ध
छुएगा नहीं पाप-

निर्विकार ही
चिन्ता रहित।

फल की अपेक्षा से
कर्म मत कर
यों समझ
कर्म करना बंद मत कर-

कर्म का पालन ही
कर्त्तव्य!

दुख में व्याकुल हो मत
सुख में उमड़ मत
संयम का पालन करने वाला
स्थित प्रज्ञ-

राग द्वेष से अतीत रहने वाला
चिदानन्द स्वरूप।

विषयवासना में
आसक्ति
तद्वारा आशा
क्रोध-

इच्छाएँ हैं
लगाम रहित अश्व !

क्रोध से अविवेक
अविवेक से मतिविभ्रम
तद्वारा कुबुद्धि
उससे सर्वनाश-

धीरे-धीरे
पतन !

कितनी ही नदियाँ मिले
किनारा पार नहीं करता सागर
इच्छाओं की विफलता से
विचलित नहीं होता स्थितप्रज्ञ-

मोह रहित
मुमुक्षु।

ज्ञानी
मोहवश होते नहीं
ब्रह्मपद ही
ज्ञान फल-

अखण्ड ज्योति
ब्राह्मी स्थिति!

सांख्यों के ज्ञानयोग-सा
योगियों के कर्मयोग-सा
दोनों प्रकारों के बारे में
पहले मैं ने ही कहा।

दोनों ही
मुक्ति-मार्ग।

आहार वर्षा से
वर्षा यज्ञ से
यज्ञ कर्मों से
सारे प्राणी अन्न से-

कर्मानुष्ठान्
सृष्टि-चक्र का मूल!

कर्म चक्र का
अतिक्रमण करने वाला
इंद्रियलोलुप
पापात्मा-

विरोध करना
आफत!

उत्तम जन के कर्म
औरों के लिए प्रमाण
उनके पीछे ही
जनता अनुगामी-

उत्तम बीज
फल-पुष्प युक्त!

इच्छाएँ, अहंकार और
दुःख को मुझे छोड़ दे
विवेकी बन
युद्ध कर-

भगवद-अर्पण
दोष-हरण!

तज कर
पर धर्म
आचरण कर
स्वधर्म-

धर्म पालन
मृत्युंजय!

आग को धूम्र
दर्पण को धूल
पिण्ड को माया
आच्छादित करते हैं-

जैसे इच्छाएँ
ज्ञान को!

राग-द्वेष को छोड़
मेरी शरण में आकर
मेरा ही ध्यान करने वाला
तपः पुनीत-

भ्रमर कीट
न्याय!

जो जैसा मेरी सेवा करता है
उसी प्रकार मैं अनुग्रह करूँगा
मानव
मेरा अनुसरण करते।

यद्भावम्
तद्भवति!

फल की अपेक्षा रहित हो
कर्त्तृत्व के अहंकार को
ज्ञानाग्नि से भस्म करने वाला
पंडित-

निरहंकारी
ज्ञानी!

समूचा
ब्रह्म की भावना से
यज्ञादि करनेवाला
ब्रह्म को ही पाता है

संकल्प ही
कार्यसिद्धि

इंद्रियों पर विजय पाकर
एकाग्रता साधने पर
ज्ञान,
मोक्ष-

श्रद्धा और सहनशीलता
मुक्ति के सोपान!

पार्थ :

हे कृष्ण ! एक बार कर्मों को छोड़ने
दूसरी बार आचरण करने को कहते
स्पष्ट बता दे
कौन उत्तम ? -

संदेह
लोलक !

भगवान :

त्याग और निष्काम कर्म
दोनों हैं श्रेष्ठ
कर्मयोग
अति श्रेष्ठ-

कार्याचरण ही
कैवल्य-मार्ग !

फल की अपेक्षा रहित कर्म का
ब्राह्मार्पण करने पर,
कमलदल पर बूँद-सा
पाप छूते नहीं-

निमित्त मात्र है
कलुष रहित!

आत्मज्ञान से
अज्ञान नष्ट होगा
सूर्य सदृश
परमात्मा के दर्शन होंगे लभ्य

तिमिर संहार
ज्ञान-दर्शन।

विप्र, गो, गज
शुनक, चाण्डाल में
समभाव रखने वाला
पंडित-

समभाव ही
ज्ञान-सिद्धि!

मरण से पूर्व
मन की चंचलता को
जीतने वाला ही
योगी-

जीवन
जल-बिंदु!

सर्वेंदियों को
वश में रखनेवाला ज्ञानी
सर्वदा
विमुक्त-

संपूर्ण
समर्पण!

यज्ञ-तपों का भोक्ता हूँ
सर्वलोकों का ईश्वर हूँ
भूतकोटि का हितैषी हूँ
इसका ज्ञाता शान्त चित्त-

पहचान में ही
परम शांति!

संन्यास हो
और योग, एक ही
संकल्पों से मुक्त न होने वाला
बन न सकेगा योगी-

अण्ड में पिण्ड
पिण्ड में ब्रह्माण्ड !

सीमित नियंत्रित कर्म से
युक्त निदेशक को
दुःख नाशक योग
सिद्ध होगा-

सीमित
आनन्द !

जहाँ हवा नहीं
दीप-सा
साधक का मन
निश्चल-

योगियों का वैभव
एकाग्रता!

योग से युक्त आत्मा बन
सर्वप्राणियों में समदृष्टिवाला
सर्वभूतों में अपने को
अपने में ही सर्वस्व को-

समदर्शन
पंडित के लक्षण!

मन है चंचल-संदेह नहीं
काबू में रखना कठिन
वैराग्य-निष्ठा से
मन होता स्वाधीन-

अभ्यास से
आसान है विद्या!

मुझ पर मन एकाग्र कर
श्रद्धा से पूहजने वाले
योगियों में हैं
उत्तम-

एकाग्रता ही
उत्ततम योग!

हज़ारों में कोई एक ही
मोक्ष के लिए यत्न करता
कोई एक सिद्ध ही
मुझे पाता है

मोक्षगामी
सिद्ध योगी!

पंचभूत
मन, बुद्धि और अहंकार में
विभाजित हैं
मेरी यह प्रकृति-

सर्वव्यापी
सर्वेश्वर!

धरणी का पावन गंध बन
आग में तेजस बन
प्राणी मात्र का जीव बन
मैं ही हूँ-

फूल माला में
धागा!

मेरी माया से पार पाना
किसी के लिए भी दुस्तर
मेरी शरण में आनेवाले ही
तर जाते-

शरण
माया मुक्त!

आर्त
जिज्ञासु, ज्ञानी,
विषय लोलुप
मेरी सेवा करते-

चाहनेवाले को
जितना चाहे!

बहुजन्मों के पश्चात्
वासुदेव को ही समस्त
जानकर ज्ञानी
मेरी ही सेवा में डूब जाता-

मनुष्य ही जानता है
माधव का ठिकाना!

मरणकाल में
मेरा ही स्मरण करता
देह-त्यागने वाला
मुझे ही पाता-

स्मरण ही
सान्निध्य!

चिन्तन रहित हो
अभ्यास योग से
ध्यान करनेवाला
परमात्मा को ही पाता-

ध्यान ही
योग!

भुवन शासक
अखिल रक्षक, अचिंत्य रूपी
तेजोमय है
परमात्मा-

सूक्ष्म रूपी
जगत रक्षक!

इंद्रियों से अतीत
नाश से दूर
पुनर्जन्म रहित परमपद ही
मेरा परमधाम-

परम उत्तम
दिव्यधाम!

शुक्ल, कृष्ण गतियाँ
जगत में हैं शाश्वत
मुक्ति और पुनर्जन्म के
हेतु-

अनुसरणीय
आलोक पथ!

यज्ञ, तप और दान के द्वारा
पावन स्थान को पार कर
मुक्ति को
पाता है योगी-

अति उच्च स्थान
ब्रह्मपद!

प्रलयकाल में
मुझमें लय हुए प्राणी-जगत का
सृष्टिकाल में
पुनः सृजन करूँगा-

चक्री
लीला!

मेरे ही भरोसे, मेरा ही ध्यान करते
मेरी ही सेवा करने वालों के
कुशल-क्षेम
मैं ही देखूँगा-

भक्त का भार
भगवान पर ही!

भक्तिपूर्वक
पत्र, पुष्प, फल
अथवा जल समर्पित कर
स्वीकार करूँगा-

कमलनयन को प्रिय
निर्मल भक्ति!

मनको मुझ पर लगाकर
भक्त बन सेवा कर
चित्त को एकाग्र कर, ध्यान कर
मुझे पा सकेगा-

साधना में
सर्वस्व

सप्तर्षि, सनकादि
चौदह मनु ने
मेरे संकल्प से जन्म लेकर
जीव-जगत का सृजन किया

सृष्टि का मूल
भगवद् संकल्प!

मन और प्राण
मुझे अर्पित कर
मेरे बारे में चर्चा करते
संतुष्ट होते हैं ज्ञानी-

सत्संग
संतोष तरंग!

जीवों के हृदयों में
आत्म-ज्ञाता हूँ मैं
सृष्टि स्थिति लय में भी
मैं ही-

जीवात्मा ही
परमात्मा !

वेदों में सामवेद
देवताओं में इंद्र
इंद्रियों में मन
जीवों में चेतना मैं ही-

श्रेष्ठता
भगवद् स्वरूप !

अमुरों में मैं प्रह्लाद हूँ
समय हूँ
जानवरों में सिंह हूँ
पक्षियों में गरुड़ हूँ-

सस्वरूप की
अभिव्यक्ति!

ऐश्वर्य के साथ
शोभा सहित
दमकती सारी चीजें
हैं मेरे अंश ही-

आलोक
मेरा निवास!

हे पार्थ! असंख्य हों
कई प्रकार से
विविध वर्णों से युक्त
दिव्य मेरे रूप के दर्शन कर-

एक ही
नारायण!

पार्थ -

हे देव! समस्त देवताओं, ऋषियों
सृष्टिकर्त्ता और
दिव्य सर्पों को
तुझमें देख रहा हूँ

परम सुकृत है
विश्वरूप दर्शन!

हे जगन्नाथ! तेरे अनंत रूप को
अवलोक रहा हूँ
आदि मध्य एवं अंत को
देख न पा रहा हूँ

सर्वस्व वही
सर्वत्र वही!

भयंकर आकार वाला
तू कौन है?
तेरी प्रवृत्ति क्या है
बता दे-

प्रश्न ही
ताले की कुंजी!

भगवान :

काल का स्वरूप हूँ मैं
संहार के लिए कटिबद्ध मैं
तेरे युद्ध न करने पर भी
कोई भी जीवित नहीं रहेगा-

प्रलय भी
परमेश्वर ही !

पहले मेरे हाथों मारे गए
भीष्म, द्रोण, कर्ण का संहार कर
अधीरज को छोड़
शत्रु पर विजय पा-

कर्तव्य ही
परम धर्म !

पार्थ :

हे चक्रधर
तेरे पूर्व रूप को दिखा
चतुर्भुज रूप ही
पुनः धारण कर-

दैव
मनुष्य रूप में!

भगवान :

हे पार्थ ! आसानी से मिलने वाला नहीं
विश्व रूप-दर्शन
देवता भी नित्य
इसके लिए तड़पते रहते-

दर्शन भाग्य
सर्वोत्कृष्ट!

मुझ में श्रद्धा रख
एकाग्र चित्त से
उपासना करनेवाले
उत्तम योगी-

श्रद्धा-भक्ति
योगी के लक्षण!

अभ्यास से अधिक ज्ञान
उससे भी अधिक ध्यान
इनसे भी अधिक है
कर्मफल का त्याग-

त्याग
शान्ति का मूल!

जिसे इच्छाएँ नहीं होतीं
कर्त्तृत्व फलरहित वह
भक्ति रखनेवाला
मेरा प्रियतम व्यक्ति-

उत्तम
कर्मफल का त्यागी!

शत्रु और मित्र में
समदृष्टि रखनेवाला
सुखों-दु:खों में एक-सा
निरासक्त-

गोविंद का
मित्र!

स्थिर चित्त वाला
स्थिर निवास रहित
निन्दा और स्तुति में एक-सा
मेरा प्रिय-

मनो पुष्पार्पण
माधव को प्रिय!

हे पार्थ! यह शरीर ही क्षेत्र
इस क्षेत्र को
जानने वाला ही
क्षेत्रज्ञ-

देह के भीतर ही
देह-साक्षी!

निरंतर आत्म-ज्ञान,
तत्त्वज्ञान का चिन्तन,
इनके
विरुद्ध होता है अज्ञान-

ज्ञान
ज्योति समान!

कार्य-अकार्य का
हेतु है प्रकृति
सुख-दुःखों का
हेतु है पुरुष-

प्रकृति का संयोग ही
सुख-दुःख का अनुभव!

जीवों के नष्ट होने पर भी
नाश विहीन परमात्मा को
दर्शन करनेवाला ही
सच्चे अर्थों में विज्ञ है-

नित्य है
परमात्मा!

चाहे कर्त्तृत्व हो
कर्मफल का संबंध हो
जन्म-विकार ही क्यों न हो
अछूता है परमात्मा-

पंकिल में
कमल!

समस्त लोकों का आलोक
एक ही सूरज,
सर्व देहों में कांति
सर्वेश्वर-

आलोक ही
दैव!

किस ज्ञान से
मुनियों ने मोक्ष पाया
वही फिर से तुझे
बता रहा हूँ-

बार-बार
ज्ञान-बोध!

समस्त जीवधारियों की
माँ है प्रकृति,
मैं
बीज हूँ-

सृष्टि मूल
परमात्मा!

गुणों में सत्वगुण
निर्मल
ज्ञान के प्रति आसक्ति के कारण
प्राणी को वह बाँध रहा-

त्रिगुणातीत स्थिति
भगवान की अभिलाषा!

कर्मों के प्रति आसक्ति के कारण
रजोगुण
आत्मा को
बाँध रख्ता है-

विषय-वासनाएँ
अड़चन!

तमोगुण
मोह को उकसाता
अपने द्वारा जीव को
बाँध रखता-

जैसे सूरज को
बादल घेर लेते!

समभाव रख कर
कर्तृत्त्व-बुद्धि को छोड़कर
ब्रह्म में निष्ठा रखनेवाला ही
गुणातीत-

निर्गुण
उत्तम!

औंधा लटकता
संसार नामक अश्वत्थ वृक्ष
नाशरहित मानने वाला
वेदविद्-

वैराग्य ही
खड्ग!

सुगंध को हवा ढो चलने के समान
गत जीवन की भाव परंपरा को
जीव ढो जाता है
नये जन्म में-

जन्मांतर
कर्मबंधन!

सूर्य-चंद्र जिसे
आलोकित नहीं कर सकते
स्वयं प्रकाशमान
मेरा परमपद-

पुनर्जन्म रहित
परम धाम!

जठराग्नि के रूप में
जीवधारियों के शरीर में
आहार को पचाने वाला
वैश्वा नर मैं ही-

चेतना ही
प्रज्ज्वलन!

प्रतिभा, सहनशीलता, शुचिता रख
द्रोह चिंतन घमण्ड
न रखने वाले
दैवांश संभूत हैं-

सद्गुण ही
दैवांश।

अहंकार, दुरभिमान,
क्रोध, निष्ठुरता, अविवेक
दुर्गुण वाले
असुर-

बंधन
असुर संपदा!

काम, क्रोध, लोभ
नरक का द्वार
आत्मज्ञान के
विनाशक!

प्रतिकूलता ही
विनाश!

वेद शास्त्र की विधियों को छोड़
मनमाना चलनेवाला
पुरुषार्थ सिद्धि और
मोक्ष को पायेगा नहीं-

अतिक्रमण
अनर्थ!

पूर्वजन्म के संस्कार ही
सत्व, रज, तमोगुण
उन्हें
पहचान ले-

पूर्व जन्म ही
भूमिका!

सत्वगुणी देवताओं को
रजोगुणी राक्षणें को
तमोगुणी
भूत-प्रेतों को-

गुणानुसार
पूजाएँ!

और जनों को व्यथित न करता
मधुर भाषण
वेदाध्ययन
वाचक तप-

कथन ही
मंत्र !

फल की अपेक्षा को तजना ही
संन्यास की संज्ञा देते कुछ
कर्मफल के विसर्जन को
त्याग मानते कुछ और-

आम्रफल ही
फल आम का!

कर्मफल हैं तीन प्रकार के
कामना रखनेवालों को
मिलते हैं परलोक में
त्यागी इसे कभी न पाते-

फल की अपेक्षा
कर्म बंधन!

धर्म में प्रवृत्ति को
अधर्म में निवृत्ति को
बंधन-मोक्षों का ज्ञाता
सात्विक बुद्धि-

विचक्षण ही
ज्ञान।

सर्वभूतों को
नचाता ईश्वर
जीवों के हृदयों में
निवास करता-

लीला
मानुष!

सभी धर्मों को छोड़कर
मेरी शरण में आ
सारे पापों से
मुक्त करूँगा मैं-

भगवदाश्रय
पाप विमोचन!

अति रहस्य गीता शास्त्र
मेरे भक्तों को प्रदान करने वाला
श्रेष्ठ भक्त बन
मुझे है पाता-

गीता ज्ञान-दान
मुक्ति का द्वार!

हे पार्थ! एकाग्र चित्त से
मेरे इस उपदेश को सुना?
अज्ञान-जनित
तेरा मोह मिट गया?

अज्ञान ही
तिमिर!

पार्थ :

हे कृष्ण! तेरी दया से
अज्ञान मेरा नष्ट हुआ
आत्म स्मृति
जागी-

शिरोधार्य
तेरा कथन!

इस प्रकार श्री कृष्णार्जुन के संवाद के उपरांत जितने संदेह थे, उनका निवारण कर, आत्मस्मृति के जाग जाने पर, कार्य-अकार्यों का अपने को निमित्त मात्र मानकर युद्ध के लिए सन्नद्ध होता है अर्जुन।

भगवान व्यास के कारण, संजय दिव्यदृष्टि से रणभूमि में श्री कृष्ण ने पार्थ को स्वयं बताये गीताज्ञान अमृत को प्रत्यक्ष अवलोक, धृतराष्ट्र को बताने के कारण मानवमात्र को अचूक, अमृत तुल्य गीतासार नामक अमृत भंडार प्राप्त हुआ। इसे पढ़ भगवान के बताये मार्ग का अनुसरण करनेवाले ब्रह्मपद के अधिकारी बनेंगे। यह निश्चय है।

संजय :

योगीश्वर कृष्ण
धनुर्द्धारी अर्जुन
जहाँ रहेंगे, वहाँ
विजय, ऐश्वर्य होंगे-

गीताज्ञान
मोक्षकारक

व्यास महर्षि की कृपा से
कृष्णार्जुन का
रहस्य संवाद
स्वयं सुना मैंने-

संजय का
अहोभाग्य।

कवयित्री का परिचय

नाम	:	**डॉ. केतवरपु राज्यश्री**
पति	:	श्री के. माधव राव
माता-पिता	:	श्रीमती प्रभावती, स्व. महाकाली वेंकटराव
संतान	:	के.एस.एल. फणीन्द्र, श्रीकांत
शिक्षा	:	एम. कॉम. (उस्मानिया विश्वविद्यालय)
वृत्ति	:	आंध्र-प्रदेश मंत्रालय में उपकार्यदर्शी (सेवा-निवृत्त)
प्रवृत्ति	:	लेखन कार्य, वीणा वादन
		आध्यात्मिक प्रवचन, चेस खेलना, काव्य-गोष्ठी
प्रकाशित रचनाएँ	:	1. चिरु सव्वेडुलु, 2. गुंडे चप्पुल्लु
		3. ऊहल वसन्तम् , 4. सिसिंद्रीलु
		5. वेन्नेल मेट्लु , 6. नीलोकि नुव्वु
		7. तृप्ति नीवेक्कड, 8. बोम्मा-बुरुसु (व्यंजक)
		9. अक्षर केतनम् , 10. आध्यात्मिक वृद्दुलकेना ?
		11. गीतामृत (हिन्दी) 12. गीतामृत (कन्नड),
		13. गीतामृत (ईगंलीस, तेलुगु),
		14. Spring of Thoughts
		15. My London Trip

संकलन	:	(1) कविता चेतना, (2) चेतना कथा-झरी
		(3) गृहहिंसा चट्टम् महिलकु रक्षण कवचम्
		(4) पर्यावरण चिट्कालु, (5) कलाल कदंबम्
अन्य रचनाएँ	:	कथलु, सामाजिक अंशों पर व्यासालु आध्यात्मिक रचनाएँ।
संप्रति	:	सहसंपादक, साहितिकिरणम् (मासिक)
अध्यक्ष	:	लयन्स क्लब ऑफ मिलीनियम्
सलाहकार	:	आदर्शवाणी (मासिक)
व्यवस्थापक		
कार्यदर्शी	:	आंध्र प्रदेश सचिवालय, महिला उद्योगुल संघम्
सदस्य	:	(1) श्री त्यागराय गान सभ
		(2) अशोक नगर वेलफेर एंड कल्चरल सोसायटी।
पुरस्कार	:	(1) भारत भाषा भूषण
		(2) साहित्य श्री (अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन, भोपाल)
		(3) स्कला पुरस्कारम् (जी.वी.आर., आराधना संस्था)
		(4) प्रज्ञाश्री (श्री किरण सांस्कृतिक समाख्या)
		(5) टंगटूरि प्रकाशम् पंतुलु अपवार्ड (कलानिलयम्)
		(6) मदर टेरेसा अवार्ड (शी फाउण्डेशन, हैदराबाद)
		(7) स्त्रशक्ति (कलानिलयम्)
		(8) उत्तम कविता पुरस्कार (सांस्कृति संघ एवं विश्वसाहिति संस्था द्वारा)
		(9) प्रतिभ पुरस्कार (तंगिरालो मेमोरियल ट्रस्ट)
		(10) उगादि पुरस्कार (वैष्णवी आर्ट्स)
		(11) प्रपंच तेलुगु सभा में सम्मानित, तिरुपति
		(12) ताना महासभा में सम्मानित, अमेरिका के डल्लास नगर में।